संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ **भाषा : हिन्दी**
प्रकाशन दिनांक : १ जनवरी २०२६
वर्ष : ३५ अंक : ७ (निरंतर अंक : ३९७)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

मातृ-पितृ पूजन दिवस
१४ फरवरी

वेलेंटाइन डे की तबाही को
रोकने के लिए मैंने मातृ-पितृ
पूजन दिवस चलाया परंतु इतना
काफी नहीं है, शिक्षा, साहित्य
एवं प्रचार-प्रसार के माध्यमों
द्वारा और भी व्यापक संयम
की महिमा का प्रचार करो ।

- पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

दुनिया के लोगों से बिल्कुल निराली, बापूजी के प्यारों की दिवाली !

अपने गुरुदेव के दिखाये पुण्यपथ पर चलते हुए बापूजी के साधक हर वर्ष दीपावली को केवल दीपों का पर्व नहीं बल्कि सेवा, संवेदना और सद्भाव का महोत्सव बना लेते हैं। वे गरीबों, अभावग्रस्तों के बीच पहुँचकर जीवनोपयोगी वस्तुएँ प्रदान करते हैं और मुरझाये हुए हृदयों में गुरुज्ञान व भगवन्नाम के अमृत से आशा, उत्साह और आत्मविश्वास के दीप प्रज्वलित करते हैं।

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।

पूज्य बापूजी का पावन संदेश

युवाधन की रक्षा हेतु एक विश्वव्यापी अभियान

मोह की आँधी में संयम का दीप

जरा इधर देख लिया तो क्या है, जरा उससे बात कर ली तो क्या है, जरा-सा हाथ मिला लिया तो क्या है, जरा एक-दूसरे को फूल दे दिया, 'आई लव यू' बोल दिया तो क्या है ? अरे तबाही है मूर्खो ! लड़का-लड़की एक-दूसरे को प्रेम करें तो रज-वीर्य नाश होगा, जल्दी स्मरणशक्ति का नाश होगा, बुढ़ापा आयेगा, चिड़चिड़े होंगे । यौन संक्रमित रोगों, नपुंसकता, मानसिक अवसाद और आत्महत्या के शिकार होकर तबाह होंगे । माँ-बाप का अपमान करनेवाले बनेंगे । अपने भारत के युवाधन को बरबाद करने की इस पाश्चात्य हरकत को देखकर मैं अंतःकरण में बहुत चिंतित हुआ, मैंने भी ब्रह्माजी जैसा भीतर गोता लगाया कि 'इसका उपाय क्या है ?' जैसे ब्रह्माजी को तुरंत उपाय मिल गया ऐसे ही मेरे को भी युवाधन की रक्षा का उपाय मिल गया और मैंने 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' चालू कर दिया । अभी तो मातृ-पितृ पूजन दिवस का गीत कई भाषाओं में चल पड़ा है और बहुत लोगों को मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाने से फायदा हुआ है ।

अब खुदावाले भी बाबा आशाराम की सराहना करते हैं, रामवाले, कृष्णवाले, ईसावाले भी भीतर से मानते हैं । मेरा किसी ईसाई या मुसलमान अथवा किसी जाति से विरोध, द्वेष नहीं है । मैं किसी जाति, व्यक्ति, पार्टी अथवा किसीका भी अहित नहीं चाहता हूँ । मैं चाहता हूँ कि सब झोली भर लें, सब अपने जीवन में 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का माधुर्य पा लें ।

वे चाहते सब झोली भर लें,
निज आत्मा का दर्शन कर लें ॥

समाज की सबसे बड़ी चुनौती

बोलते हैं कि 'जलवायु प्रदूषण की समस्या बड़ी चुनौती है, फलानी बड़ी चुनौती है, आर्थिक संकट की चुनौती है, यह चुनौती है...' अरे, सबसे बड़ी चुनौती है किशोर-किशोरियों की तबाही करनेवाला वेलेंटाइन डे ! वेलेंटाइन डे मना के किशोर-किशोरियाँ कोमल अवस्था में अपनी तबाही कर रहे थे । उस तबाही को रोकने के लिए मैंने मातृ-पितृ पूजन दिवस चलाया परंतु इतना काफी नहीं है, शिक्षा, साहित्य एवं प्रचार-प्रसार के माध्यमों द्वारा और भी संयम की महिमा का प्रचार करो । नहीं तो विश्व के सारे बच्चे तबाही की तरफ बहुत तेजी से जा रहे हैं । एंड्रोइड मोबाइल, कम्प्यूटर या लैपटॉप के द्वारा पॉर्न वेबसाइट्स और ब्लू फिल्में देखते हैं और मैं बोल नहीं सकता हूँ ऐसी क्या-क्या हरकतें करके अपनी तबाही कर लेते हैं । ९वीं-१०वीं तक तो परीक्षा में अंक ठीक आ जाते हैं, उसके बाद देखो तो ठुस्स ! ठुस्स क्यों ? कि जिससे बुद्धिशक्ति पुष्ट होती है उस चीज का नाश करते हैं जननांगों से । कई किशोरियों को प्रदर रोग, किशोरों को स्वप्नदोष घेर लेता है, यहाँ तक कि वे आत्महत्या के कगार तक भी पहुँच जाते हैं ऐसे अभागे हो जाते हैं ।

बच्चों की तबाही रुके इसलिए उनको सारस्वत्य मंत्र की दीक्षा देता हूँ । दीक्षा में खास शर्त यह है कि 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश पुस्तक पढ़ें-पढ़ायें ।' साधक बच्चों को उस पुस्तक के गुण

मातृ-पितृ पूजन दिवस : १४ फरवरी

धर्म एवं संस्कृति की रक्षा में आशारामजी बापू का योगदान अतुलनीय है : संत समाज

आप कहते हैं...

महामंडलेश्वर स्वामी अभयानंद सरस्वतीजी, अध्यक्ष, अखिल भारतीय संत समिति (उ.प्र.) : सनातन धर्म की रक्षा हो इसके लिए समय-समय पर परमात्मा ने अनेक रूपों में अवतार लिया। बहुत सारे महापुरुष आये। उसी परम्परा में हमारे संत श्री आशारामजी बापू भी इस धरा पर आये हैं। उन्होंने भी बहुत सारे कार्य किये। अन्यायकारी लोगों ने दुर्नीति का अवलम्बन लेकर झूठे केस लगवा के उनको परेशान किया। परंतु सत्य पराजित नहीं हो सकता। **सत्यमेव जयते।**

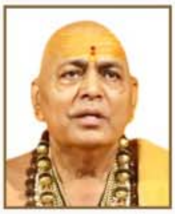

महामंडलेश्वर अरुण गिरिजी, आवाहन पीठ, मुख्य संरक्षक, हिन्दू युवा वाहिनी : बापूजी ने धर्मांतरण को रोका। आज भी बापूजी के अनेक प्रकल्प पूरे देश में चल रहे हैं।

श्री श्री १००८ महामंडलेश्वर स्वामी ललितानंद गिरिजी, श्री निरंजनी अखाड़ा : हमारे अंतर्राष्ट्रीय विश्वविख्यात संत आशारामजी बापू ने देश और धर्म के लिए बहुत कार्य किये हैं। मैं भारत सरकार से, न्यायपालिका से आग्रह करूँगा कि बापूजी के बारे में तटस्थ होकर विचार करें।

निर्मल पीठाधीश्वर श्री महंत स्वामी ज्ञानदेव सिंहजी, अध्यक्ष, श्री पंचायती अखाड़ा निर्मल : आशारामजी बापू भारत की एक महान विभूति हैं। उन्होंने सनातन धर्म का बहुत प्रचार किया है। बच्चों की उत्तम शिक्षा के लिए गुरुकुलों की व्यवस्था की। राष्ट्ररक्षा, गौरक्षा, सनातन धर्म की रक्षा के लिए महापुरुषों ने बलिदान दिये हैं। ऐसे महापुरुषों में हमारे आशारामजी बापू भी हैं।

महंत राघवेन्द्रदासजी, श्री पंचायती अखाड़ा बड़ा उदासीन निर्वाण : भले ही आशारामजी बापू का अपयश करने की कोशिश की गयी स्वार्थी तत्त्वों द्वारा, राजनीतिक लोगों द्वारा लेकिन आज भी पूरा समाज उनका सम्मान करता है और उनका यश हमेशा रहेगा।

संत गोपीरामजी, कथावाचक, वृंदावन : आज सभी संत और वक्ता मिल के राष्ट्र को, धर्म को, गाय को बचाने का जितना कार्य कर पा रहे हैं उतना आज से २० वर्ष पहले अकेले संत श्री आशारामजी बापू करते थे। आज इतना सब मिल के कर रहे हैं फिर भी उनकी बराबरी नहीं कर पा रहे हैं।

श्री हर्षद कृष्ण पाठकजी, निम्बार्क सम्प्रदाय : सबसे पहले धर्मांतरण रोकनेवाले कौन थे ? आशारामजी बापू। वे युवा पीढ़ी को सही मार्ग पर लेकर आये, नशामुक्ति अभियान चलाया, मातृ-पितृ पूजन दिवस, तुलसी पूजन दिवस शुरू किया। उन्होंने बहुत-से अच्छे कार्य किये। उनको जेल क्यों भेजा गया ? क्योंकि विधर्मियों को

पूज्य बापूजी का पावन संदेश

जागरण, जप और तपस्या का महापर्व

(१५ फरवरी : महाशिवरात्रि पर विशेष)

महाशिवरात्रि उत्सव नहीं है, तपस्या का पर्व है । इस दिन जागरण करो, जप करो, ध्यान करो । शिवरात्रि का जागरण... आहा !

स्वल्पपुण्यवतां राजन् विश्वासो नैव जायते ।

जिसके जीवन में अल्प पुण्य हैं उनको व्रत-उपवास में महत्त्वबुद्धि नहीं होती है । लेकिन अनजाने में भी महाशिवरात्रि की रात्रि को जग गये तो दुस्सह नाम के शिकारी में से राजा विचित्रवीर्य बने और फिर भगवान वीरभद्र हो के अब भी पूजे जाते हैं । तो इस पर्व का धन इकट्ठा करो ।

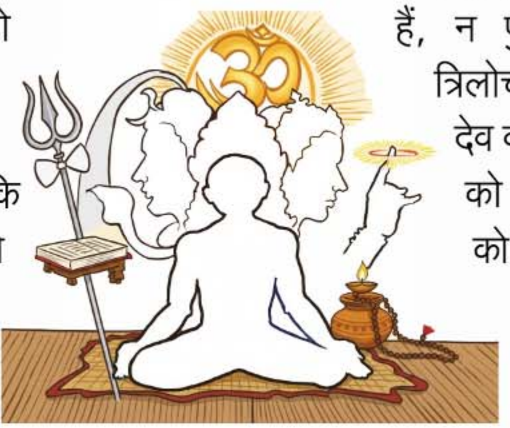

बड़ी सार बात है कि महाशिवरात्रि का व्रत न करने से पाप लगता है लेकिन करने से ऐसी बुद्धि होती है जैसी सतयुग, त्रेता और द्वापर के लोगों की होती थी और वही पुण्यलाभ प्राप्त होता है जो उस काल में मिलता था क्योंकि काल के प्रभाव से जो देव, तीर्थ, पुण्य लुप्त हो गये हैं वे शिवरात्रि के दिन पूर्णतः विद्यमान होते हैं । इसीलिए इस दिन का जागरण सब पर्वों से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है । इस दिन का जागरण जीवन में बड़ी बरकत लाता है और जो शुभ कर्म किये जाते हैं वे अनंत गुना फल देते हैं ।

'शिव' माने कल्याणकारी । **सत्यं शिवं सुन्दरम् ।** वे सत्यस्वरूप हैं, कल्याणस्वरूप हैं, हितकारी हैं । महाशिवरात्रि की रात को सारे तीर्थों और सारे देवों का धरती पर अस्तित्व, प्रभाव रहता है । इसलिए सबके मन अच्छे रहते हैं, शांति रहती है, प्रसन्नता रहती है ।

पर्व विशेष

महाशिवरात्रि को शिवभक्तों के जीवन में आह्लाद तो होता ही है, बिल्कुल यह प्रत्यक्ष है । यह तिथि-त्यौहारों का प्रभाव भी है और शिवजी-वसिष्ठजी का संवाद भी ऐसा है कि हस्तामलकवत् ब्रह्मज्ञान हो जाय । 'श्री योगवासिष्ठ महारामायण' में वसिष्ठजी महाराज को शिवजी बोलते हैं : 'न सर्व देवताओं के अधिपति इन्द्र देव हैं, न कमलोद्भव ब्रह्मा देव हैं, न पुंडरीकाक्ष विष्णु देव हैं, न त्रिलोचन महादेव देव हैं, वास्तविक देव वह है जो भूताकाश, चित्ताकाश को जानता है चिदाकाश, उस देव को मेरा प्रणाम है । मेरे साकार रूप का पूजन प्रारम्भ के उपासकों के लिए कहा है । कारण कि जो योजनपर्यंत नहीं चल सकता उसको दो कोस चलना भी अच्छा ही है ।'

ऐ भोलेबाबा ! क्या तुम्हारी सच्चाई है, क्या सूझबूझ है, क्या पहुँच है ! चिद्घन चैतन्य है शिवजी का असली स्वरूप और शिवजी अपने असली स्वरूप का वर्णन इसलिए कर रहे हैं कि तुम भी अपने असली स्वरूप को 'मैं'रूप में जान लो । कितनी उदारता है ब्रह्मज्ञानी भगवान शिवजी की, ब्रह्मस्वरूप शिवजी की !

जागरण, जप व सत्कर्म महाफलदायी

महाशिवरात्रि के १५-१७ दिन बाद होली आती है । ये दोनों महापर्व हैं, इनमें आप सावधान रहें ।

शतं विहाय भोक्तव्यं सहस्रं स्नानमाचरेत् ।
लक्षं त्यक्त्वा तु दातव्यं कोटिं त्यक्त्वा हरिं भजेत् ॥

हिन्दू धार्मिक स्थलों पर सरकारी नियंत्रण हिन्दुओं के संवैधानिक अधिकारों का हनन

– श्री आशुतोष झा, अधिवक्ता, कोलकाता उच्च अदालत एवं संयुक्त सचिव, हिन्दू एकता मंच (प.बं.)

चर्चित खबर

(अंक ३९५ के '...धर्मनिरपेक्षता की आड़ में लूट' का शेष)

हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय द्वारा हाल ही में यह दिशानिर्देश दिया गया कि 'भक्तगण मंदिर के देव को इस शुद्ध विश्वास के साथ दान अर्पित करते हैं कि उसका उपयोग केवल मंदिर में प्रतिष्ठित देव की सेवा, मंदिर–परिसर के रखरखाव और सनातन धर्म के प्रचार–प्रसार में ही किया जायेगा । जब सरकार इन पवित्र चढ़ावों को अपने अधिकार में लेती है तो वह इस विश्वास को तोड़ती है । मंदिर–निधि के प्रत्येक रुपये का उपयोग केवल मंदिर के धार्मिक उद्देश्य या धर्मार्थ कार्यों के लिए ही होना चाहिए । उसे राज्य की सामान्य आय की तरह मानकर सरकार की किसी कल्याण योजना की ओर मोड़ा अथवा उसके लिए स्थानांतरित या दान नहीं किया जा सकता ।'

न्यायालयों द्वारा समय–समय पर इस प्रकार के निर्देश दिये जाते रहे हैं पर सरकारें उनकी अवहेलना करते हुए हिन्दू मंदिरों के धन का गैर–वैधानिक रूप से उपयोग करती रही हैं ।

टेम्पल वर्शिपर्स सोसायटी के अध्यक्ष श्री टी. आर. रमेश कहते हैं : ''संविधान का अनुच्छेद २६ प्रत्येक धार्मिक समुदाय को धार्मिक संस्थाओं की स्थापना और उनका संचालन करने, धार्मिक मामलों पर बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के निर्णय लेने, सम्पत्तियों का स्वामित्व व अधिग्रहण करने तथा उन सम्पत्तियों का विधिसम्मत प्रबंधन करने का मौलिक अधिकार देता है । संविधान इन अधिकारों को सभीको समान रूप से प्रदान करता है, चाहे वे बहुसंख्यक दर्जे के हों या अल्पसंख्यक । परंतु केवल बहुसंख्यकों यानी हिन्दुओं को ही इन अधिकारों से वंचित रखा गया है । लगभग हर राज्य सरकार ने ऐसे विशेष कानून लागू किये हैं जिनके माध्यम से हिन्दू धार्मिक संस्थाएँ नियंत्रित की जाती हैं । अनुमान है कि तमिलनाडु की सरकार के प्रशासन में हिन्दू मंदिरों और धर्मार्थ न्यासों (ट्रस्टों) की ५०,००० एकड़ से अधिक मूल्यवान भूमि गायब हो चुकी है । ये वे हिन्दू धार्मिक स्थान थे जो अब तथाकथित धर्मनिरपेक्ष या यहाँ तक कि हिन्दू–विरोधी स्थानों में बदल गये हैं । तमिलनाडु में सरकारी प्रबंधन में हिन्दू मंदिरों, मठों और धर्मार्थ न्यासों को एक वर्ष में लगभग ६००० करोड़ रुपये का नुकसान होता है । यह एक अत्यंत विशाल धनराशि है, जिससे हिन्दू नागरिकों को वंचित रखा जा रहा है ताकि उनको उनका धर्म मानने, उसका पालन और प्रसार करने में बाधा हो । इस सम्भावित वार्षिक आय से हजारों हिन्दू बच्चों को सनातन धर्म के मूल्यों पर आधारित निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध करायी जा सकती है ।''

सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता श्री अश्विनी उपाध्याय कहते हैं : ''भारत में एक भी मस्जिद या चर्च सरकार के नियंत्रण में नहीं है पर कई सारी ऐसी राज्य सरकारें हैं जो मठ–मंदिरों से चढ़ावा ले रही हैं और बाद में उससे मदरसों को

मूर्ख से बहस करके कोई व्यक्ति बुद्धिमान नहीं कहा जा सकता है ।

विद्यार्थी संस्कार

तुम सब कुछ कर सकते हो – पूज्य बापूजी

अहमदाबाद में एक संस्था है – सस्तुं साहित्य वर्धक कार्यालय, भिक्षु अखंडानंदजी की प्रसादी । अखंडानंद कौन थे ? गुरुकुल में पढ़नेवाले एक विद्यार्थी । घास-फूस की कुटियाएँ थीं । घंटी बजे तो विद्यार्थी गुरुजी के चरणों में आ जायें, पढ़ें और फिर आश्रम का अपना-अपना काम करें । एक बार गुरुजी किसी काम से कहीं गये थे । किसी असावधान विद्यार्थी से रसोई बनाते-बनाते घास की कुटिया में आग लग गयी । बैल से अरहट घूमता था तब पानी निकलता था । बैलगाड़ी अतिथियों को लेने को गयी थी तो बैल वहाँ चले गये थे । पानी निकालने का दूसरा कोई साधन नहीं था और आश्रम की एक झोंपड़ी जली, दूसरी जली... आग ने जोर पकड़ लिया ।

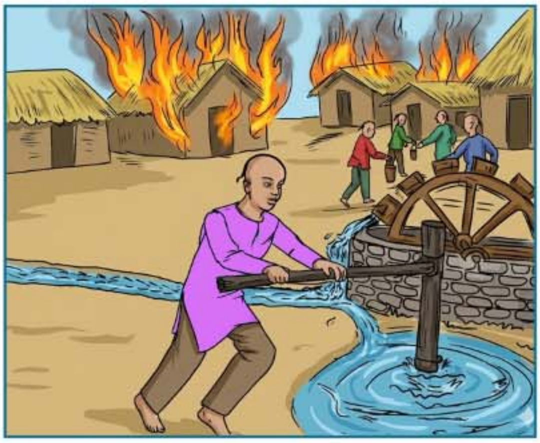

सब विद्यार्थी सोचने लगे कि 'अब क्या करें, बैल नहीं हैं, अरहट बंद है तो पानी कैसे लायें, आग कैसे बुझायें ? हाय... गुरुजी ! अब क्या होगा ?'

एक पतला-दुबला विद्यार्थी आया और बोला कि ''ऐसे रोना क्या रोते हो ? कुआँ है, अरहट है, केवल बैल नहीं हैं । चलो, मैं घुमाता हूँ ।''

वह अरहट से जुड़ गया और खूब घुमाया । बैल जितनी फुर्ती से पानी निकालते थे उससे भी तेजी से उसने पानी निकाला । दूसरे विद्यार्थी तो देखते रहे । वह था तो पतला-दुबला विद्यार्थी लेकिन मनोबल था । उसने महाराज ! पानी-पानी कर दिया और दूसरे विद्यार्थियों में भी साहस भर दिया । पानी की बाल्टियाँ डालते-डालते आग पर नियंत्रण हुआ । गुरु महाराज आये । शिष्यों ने कहा : ''आज तो पूरे आश्रम को आग अपना ग्रास बना लेती महाराजजी ! बैल भी चले गये थे, पानी की भी बड़ी तंगी थी ।''

गुरुजी ने कहा : ''फिर तुमने यह कैसे किया ?''

बोले : ''वह पतला-सा एक विद्यार्थी है उसने अरहट चलाया ।''

''उसने ऐसा अरहट चला दिया ! अभी कहाँ है ?''

''अब भी चला रहा है । पानी इकट्ठा कर रहा है ।''

गुरुजी नजदीक गये । गुरुजी ने कहा : ''बेटा ! क्या करता है ?''

बोला : ''गुरुजी ! यह हम नहीं कर सकते – ऐसा तो हम पढ़े नहीं । हमारे अंदर ईश्वर का अथाह बल है । हम जो चाहें वह कर सकते हैं – यह बात आपकी हमने पकड़ ली । फिर अरहट को पकड़कर हमने चलाया तो पानी निकलने लग गया और क्या है ?''

शरीर पतला-दुबला परंतु आत्मबल विकसित हो गया तो शरीर की दुर्बलता भी चली जाती है । वही विद्यार्थी आगे चलकर एक महान विभूति भिक्षु अखंडानंद बने और 'सस्तुं साहित्य वर्धक कार्यालय' की स्थापना की । सस्ते में सत्साहित्य उपलब्ध कराने की सेवा के लिए इन्हें जाना जाता

कम-से-कम अपने मनरूपी बंदर को इतना तो समझाओ

– पूज्य बापूजी

तेजस्वी युवा

नाइजीरिया की घटित घटना है । किसी पी.डब्लू.डी. (लोक निर्माण विभाग) के सरकारी अधिकारी ने एक बंदर पाल रखा था । ठेकेदारों के बिल पास करने के लिए इस अधिकारी के हस्ताक्षर की आवश्यकता होती थी । कमीशन मिलता था, जो भी कुछ हो ।

एक ठेकेदार ने उसको पार्टी दी थी तो वह अधिकारी अपना बंदर पार्टी में ले गया । बंदर तो मनुष्य की नकल करता है । सब एक-एक प्याली पी रहे थे तो बंदर को भी उसके साहब ने दी प्याली और बंदर ने भी चढ़ा ली । पहले से ही बंदर, इतनी-सी खोपड़ी और ऊपर से वाइन पी, दूसरी एकाध घूँट भरी । अब बंदर को तो नशा चढ़ा, बड़ी बुरी हालत हो गयी । एक तो बंदर चंचल और फिर वाइन पी ली और फिर तौबा !... बड़ी मुश्किल से उसको सँभाल के ले गया वह अधिकारी ।

पहले से ही बंदर, इतनी-सी खोपड़ी और ऊपर से वाइन पी, दूसरी एकाध घूँट भरी । अब बंदर को तो नशा चढ़ा...

कुछ दिनों के बाद उसी अधिकारी को दूसरे किसी ठेकेदार ने बुलाया । वह फिर से अपने पाले हुए बंदर को ले गया और शराब की प्याली दी तो बंदर ने मुँह घुमा लिया । प्याली उसके सामने धर के पुचकार के एक-दो बार वेटर ने प्रयास किया, उसके मालिक ने किया, फिर किसीने जबरदस्ती उसको प्याली दी । तो उस बंदर ने वहाँ जो प्यालियाँ और बोतलें पड़ी थीं, उठाकर उधर ही दे मारीं और तोड़-फोड़ करके हुप-हुप करता हुआ शराबियों की महफिल से भाग निकला ।

तो अपने मनरूपी बंदर को कम-से-कम इतना तो समझाओ कि 'भाई ! नाइजीरिया के बंदर जैसा तो तू बन जा कि एक बार नुकसान का एहसास हुआ तो दोबारा नहीं पीता है । तू काहे को भैया बार-बार शराब पीता है !' इस शराब से आपके रक्त में अल्कोहल आ जाने से आपको मुँह का, गले का, अन्न-नलिका का, बड़ी आँतों का, यकृत का और महिलाओं को स्तन का कैंसर हो सकता है ।

मैं फिर से हाथ जोड़ता हूँ, अगर कोई शराब पीते हों तो उत्तरायण के दिन यह दृढ़ संकल्प करो कि 'मुझे इस बुराई से छूटने में भगवान मदद करेंगे ।' God helps those who help themselves. भगवान उसीको मदद करते हैं जो अपने-आपको ऊँचा उठाने में मदद करता है । कम-से-कम नाइजीरिया के बंदर से नीचे नहीं गिरो । बंदर जैसा काम तो आपके मन से लो । बंदर में भी त्यागने का सामर्थ्य है । हे शराबी भाइयो ! उससे भी थोड़ी सीख लोगे तो उसे प्रसन्नता होगी ।

जाम पर जाम पीने से क्या फायदा ?
रात बीती सुबह को उतर जायेगी ।
तू संतों की प्यालियाँ पी ले,
तू सत्संग की प्यालियाँ पी ले,
तेरी सारी जिंदगी सुधर जायेगी ॥

साँईं को अपना मान लो ।

लाला ! भाईसाहब ! दया करो अपने-आप पर । मेरी सलाह को हृदय से लगाओ तो हृदयेश्वर तक पहुँच पाओगे सरलता से ।

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
(गीता : १८.६१)

परमहंस संत भूमानंदजी के जीवन-प्रसंग

(अंक ३९५ से आगे)

सरलता व त्याग की मूर्ति

भूमानंदजी महाराज बहुत ही सरल स्वभाव के संत थे, साथ ही त्याग की मूर्ति भी थे । अपना कह सकें ऐसा उनके पास कुछ नहीं था । भोजन भी वे बड़ा सादा करते थे । दाल, चावल, सब्जी, रोटी जो भी पदार्थ होते उन सबको एक साथ मिलाकर उसमें २-३ प्याली पानी डाल देते, जिससे पतला पीने जैसा मिश्रण बन जाता था । फिर उसमें से वे पहले स्वयं पीते और बाद में जो भक्त उधर बैठे होते उनको प्रसादरूप में दे देते थे ।

गाँव के राजा वीरभद्रसिंह लुणावाड़ा में होते तब महाराजजी के दर्शन करने अवश्य आते थे । राजा का उनके प्रति खूब आदरभाव था । महाराजजी बैठे रहते थे तो राजा दूर से ही अपनी गाड़ी रोककर वहीं खड़े रहते जब तक भूमानंदजी कुछ आज्ञा न दें ।

वेरी हनुमान मंदिर के बगल के बरामदे में भूमानंदजी की गद्दी है । उस एक ही स्थान पर चबूतरे से नीचे उतरे बिना उन्होंने १२ वर्ष बिताये ।

महापुरुष के दर्शन का प्रभाव

एक विद्यालय के आचार्य हनुमानजी के भक्त थे । वे रोज वेरी हनुमान मंदिर में दर्शन करने आते थे तो उन्हें पहले चबूतरे पर विराजमान भूमानंदजी के दर्शन होते फिर हनुमानजी के दर्शन होते थे । एक दिन जब वे दर्शन करने मंदिर के चबूतरे पर चढ़े तो भूमानंदजी ने अपनी ओर इशारा करते हुए कहा : ''हनुमानजी तो यहाँ बैठे हैं । तुम कहाँ जा रहे हो ?'' यह सुनते ही उन आचार्य ने दीया वहीं रखा और श्रीफल भी महाराजजी के पास ही चढ़ा दिया ।

जो भक्त भूमानंदजी के दर्शन के लिए आते थे उन सभीके लिए एक अनलिखा नियम था - 'एक ही स्थान पर बैठना, बिना किसी हलचल के बैठना और मौन रहना ।' अगर कोई इस नियम को तोड़ता तो वे सिर्फ 'हूँ' कहते थे । सामनेवाला समझ जाता था कि 'अब उसे मौन हो जाना है ।' अगर वह तब भी मौन नहीं होता तो महाराजजी कहते : ''आप पधारिये (यानी यहाँ से जाइये) !''

उस सभा में हर रोज एक मारवाड़ी बर्तन बेचनेवाला भी आता था । वह सुबह आता और महाराजजी के दर्शन करके बर्तन बेचने निकल पड़ता । बाह्य रूप से कुछ दिनों तक यूँ ही चलता रहा परंतु संत-दर्शन करते-करते अंदर से उसका जीवन परिवर्तित हो गया । एक दिन उसने अपनी गठरी-बोरा एक तरफ रख दिया और स्वयं महाराजजी के पास उनके चरणों की ओर बैठ गया । उस दिन से उसने बर्तन बेचने जाना ही छोड़ दिया । सिर्फ इतना ही नहीं, उसने चबूतरे से कहीं भी जाना बंद कर दिया था । नासमझ लोग उसे 'पागल' कहते थे, पर वह वैसा पागल नहीं था जैसा वे संसारी पागल मान रहे थे । वह तो संत-दर्शन, संत-सेवा से आनंद, रस, शांति का अमृत पीने की 'गल' (युक्ति) 'पा' चुका सौभाग्यशाली 'पागल' था, जिसका अनुसरण संसारी मति के पागलों का दुःखद पागलपन मिटाने की क्षमता रखता था । अब वह पूरे दिन वहीं बैठता और 'भूमानंद महाराज, भूमानंद महाराज...' करता था ।

तो सवाल उठता है कि उसका गुजारा कैसे

चीन के विद्वानों ने की भगवद्गीता की मुक्त कंठ से सराहना

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

हाल ही में बीजिंग स्थित भारतीय दूतावास द्वारा सांस्कृतिक व दार्शनिक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें चीन के विद्वानों ने भगवद्गीता की भूरि-भूरि प्रशंसा की । मुख्य वक्ता प्राध्यापक झांग बाओशेंग, जिन्होंने भगवद्गीता का चीनी भाषा में अनुवाद किया है, ने इस ग्रंथ को 'आध्यात्मिक महाकाव्य' की उपमा देते हुए बताया कि यह कर्तव्य व कर्म के भारत के शाश्वत मूल्यों व अनासक्ति को उजागर करता है । ये सिद्धांत आज भी भारतीय जीवन को दिशा देते हैं ।

अपनी भारत यात्रा को याद करते हुए प्राध्यापक झांग ने कहा कि ''मुझे पूरे देश में भगवान श्रीकृष्ण की जीवंत उपस्थिति महसूस हुई । यह एक नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति है जो लोगों के दैनिक जीवन में समायी हुई है ।'' उन्होंने गीता को केवल एक धार्मिक ग्रंथ ही नहीं बल्कि भारत की आत्मा की जीवंत अभिव्यक्ति कहा ।

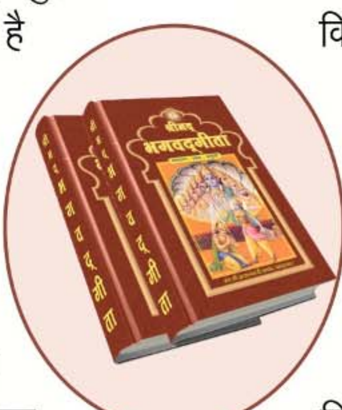

प्राध्यापक वांग झी-चेंग ने गीता को 'ज्ञान का अमृत' कहकर इन शब्दों में गीता की सराहना की : ''गीता ५००० से ज्यादा वर्ष पूर्व युद्धक्षेत्र में हुआ संवाद है लेकिन यह समय की सीमा से परे है और आधुनिक विश्व की चिंताओं का समाधान करती आ रही है । भगवान श्रीकृष्ण का ७०० श्लोकों में दिया गया उपदेश आध्यात्मिक कुंजियों की तरह है, जो हजारों वर्षों से प्रासंगिक बनी हुई हैं ।''

उन्होंने गीता में बताये गये तीन मार्गों - कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग को जीवन की चुनौतियों का समाधान तथा जीवन में संतुलन और स्पष्टता पाने हेतु कालातीत मार्गदर्शक बताया ।

प्राध्यापक यू लोंगयू ने कहा कि ''मैं हमारे विद्वानों से अपील करता हूँ कि वे भारतीय दर्शन का निष्ठापूर्वक अध्ययन करें, जिससे चीन के पुनरुत्थान, भारत-चीन सौहार्द और विश्वशांति को बढ़ावा मिले ।''

ऑस्ट्रिया के अध्यात्मवादी दार्शनिक रुडोल्फ स्टीनर कहते थे : ''भगवद्गीता जैसी उत्कृष्ट रचना को पूर्णतः समझने के लिए आवश्यक है कि हम अपनी आत्मा की उसके साथ एकरूपता स्थापित करें ।''

जिन संत-महापुरुषों को भगवद्-तत्त्व का साक्षात्कार हुआ है ऐसे महापुरुषों की अमृतवाणी द्वारा ही शास्त्रों का गूढ़ रहस्य समझ में आ सकता है । अतः यदि विश्वमानव वैदिक ज्ञान का पूरा लाभ लेना चाहता है, भौतिकवाद से अध्यात्मवाद की ओर उन्मुख होकर सच्ची सुख-शांति पाना चाहता है तो उसे भारत के ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों का उनके हयातीकाल में लाभ उठाना चाहिए । वर्तमान में पूज्य संत श्री आशारामजी बापू भारतवर्ष के ऐसे संत-रत्न हैं जिन्होंने अपनी अनुभव-सम्पन्न वाणी से लोगों को गीता और वेदांत-ज्ञान अत्यंत सरल व सरस ढंग से समझाकर उसे उनके

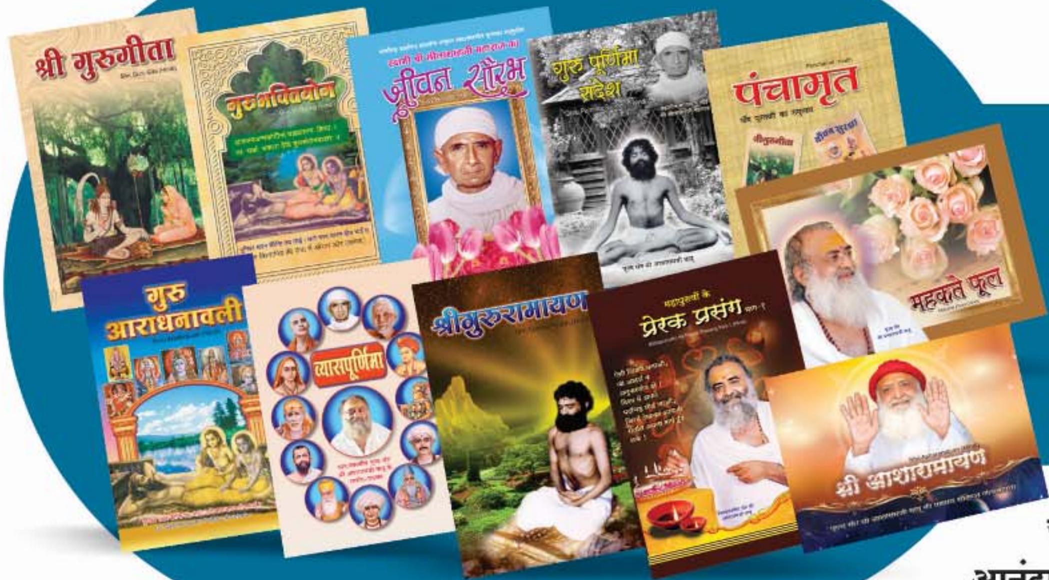

ईश्वरप्राप्ति की तीव्र गति से यात्रा हेतु

जीवन को प्रभु-प्रेममय, रसमय, आनंदमय बनाने तथा परमात्मप्राप्ति के सलामत मार्ग 'गुरुभक्तियोग' में सफलता हेतु मददरूप सत्साहित्य

सस्ता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य ! पढ़िये-पढ़ाइये अवश्य !

सर्दियों हेतु बल-पुष्टिदायी विशेष उत्पाद

खजूर, स्पेशल च्यवनप्राश, ब्राह्म रसायन, च्यवन रसायन, वज्र रसायन टेबलेट, अश्वगंधा टेबलेट व चूर्ण, अश्वगंधा पाक

आपके गर्भस्थ शिशु को सुसंस्कारित करने के विभिन्न माध्यमों का सुंदर संकलन

दिव्य शिशु गर्भ संस्कार किट

इसमें आप पायेंगे : नित्य पठनीय साहित्य, सामान्य प्रसूति हेतु तुलसी मूल माला, रक्षासूत्र, मेमोरी कार्ड - इसमें है गर्भ-संवाद, अलग-अलग राग और संस्कृत श्लोक, ध्यान व कीर्तन का समन्वय।

सम्पर्क करें : दिव्य शिशु गर्भ संस्कार केन्द्र - ९१५७३८९७०६

दिव्य स्वर्णक्षार युक्त

पीयूष बल्य रसायन

यह गौ-पीयूष से प्राप्त ओज-तेजवर्धक स्वर्णक्षार व अन्य अत्यंत गुणकारी पोषक तत्त्वों से युक्त होने से शक्ति, पुष्टि का दिव्य स्रोत है।

तुलसी बीज गोली

* रोगप्रतिकारक शक्ति वर्धक * भूख बढ़ाने में सहायक * कृमिनाशक * शुक्र धातु वर्धक * आँतों में संचित मल को निकालने में लाभदायी * हृदय के लिए बलप्रद * त्वचा के वर्ण को निखारने में सहायक

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा सामग्रीप्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ९४२८८५७८२०. ई-मेल : contact@ashramestore.com

देश-विदेश में हो रहे तुलसी पूजन कार्यक्रमों की झलकियाँ

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2024-26
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2026)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/24-26
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between
1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st Jan 2026

अंधियारखोर, जि. बेमेतरा (छ.ग.)

गोरौला, जि. अलीगढ़ (उ.प्र.)

मोरबी (गुज.)

खलीलपुर, जि. रेवाड़ी (हरि.)

सुरेन्द्रनगर (गुज.)

औरंगाबाद (बिहार)

हल्दी, जि. राजनांदगाँव (छ.ग.)

राजकोट

मछलीशहर, जि. जौनपुर (उ.प्र.)

फरीदाबाद (हरि.)

आगरा

चाँदखेड़ा-अहमदाबाद

गुढ़ियारी-रायपुर (छ.ग.)

माउंटेन हाउस-कैलिफोर्निया

सत्य, संस्कार और सद्विचारों के संवाहक : ऋषि प्रसाद सम्मेलन व अभियान

प्रागपुर, जि. कांगड़ा (हि.प्र.)

सरकाघाट, जि. मंडी (हि.प्र.)

पटियाला

ऋ.प्र. के सेवाधारी पुरस्कार पाते हुए (अहमदाबाद)

बलांगीर (ओड़िशा)

प्रयागराज

जम्मू

मरलागाँव, जि. वलसाड (गुज.)

बदरपुर-दिल्ली

सातारा (महा.)

रेवाड़ी (हरि.)

गोंदिया (महा.)

लखीमपुर खीरी (उ.प्र.)

प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

सम्भाजीनगर (महा.)

इंदौर

वापी (गुज.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें। आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : Rishi Prasad ऋषि प्रसाद Rishi Darshan ऋषि दर्शन Lok Kalyan Setu लोक कल्याण सेतु

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : रूपनारायण भगवानसिंह लोधी **मुद्रक** : विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी